राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं
अनुसंधान संस्थान, भोपाल

सम्पर्क सरिता

वर्ष 14 अंक 01, जनवरी – फरवरी 2013

राजाभोज की सिविल इंजीनियरिंग पर राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित

अपने स्वर्णिम अतीत पर गर्व करें : प्रो. अमिताभ घोष

सेमिनार को संबोधित करते हुए प्रो. अमिताभ घोष

राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान भोपाल एवं स्थापत्य और योजना विद्यालय (एसपीए) द्वारा दिनांक 20 और 21 जनवरी को एनआईटीटीटीआर भोपाल में राजाभोज की सिविल इंजीनियरिंग विषय (Rediscovering the Civil Engineering and Technology with reference to Raja Bhoj) पर राष्ट्रीय सेमिनार सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. अमिताभ घोष, अध्यक्ष संचालक मंडल, एनआईटीटीटीआर, भोपाल ने कहा कि अपने अतीत को जाने बिना आप प्रगति नहीं कर सकते। हमें अपने स्वर्णिम अतीत पर गर्व करना चाहिए। जब भारत की ज्ञान संपदा को पूरी दुनिया ने महत्त्व देना शुरू किया तब जाकर हम जागे। राजा भोज का सिविल इंजीनियरिंग व स्थापत्य कला के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने रवीन्द्रनाथ टैगोर व विवेकानंद का उदाहरण देते हुए कहा कि जब दुनिया के दूसरे देशों ने इनके ज्ञान का लोहा मानना शुरू किया तब हमारा ध्यान इनकी ओर गया। भारत यदि अपने खोये हुए आत्मविश्वास को पुनः प्राप्त कर ले तो उसे महाशक्ति बनने से कोई नहीं रोक सकता। हमें अपनी रचनात्मकता व नवाचार पर विश्वास रखते हुए विज्ञान और प्रोद्यौगिकी के क्षेत्र में उत्कृष्टता की ओर आगे बढ़ना चाहिए। सेमिनार के उद्घाटन अवसर पर एनआईटीटीटीआर के निदेशक प्रो. विजय अग्रवाल ने प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए कहा कि व्यक्तित्वों को कई बार राजनीति से जोड़ दिया जाता है। इस सेमिनार का उद्देश्य हमारी युवा पीढ़ी को हमारे पुरातात्विक व पारंपरिक ज्ञान से अवगत कराना है। इस सेमिनार के माध्यम से हम अपने पारंपरिक ज्ञान एवं आधुनिक तकनीक को मिला जुलाकर नवीन तकनीक के बारे में विचार कर सकते है। प्रो. अग्रवाल के अनुसार स्थापत्य और निर्माण, रसायन, खगोलशास्त्र, जलपोत निर्माण, जल संर्वधन जैसे 84 विषयों पर लिखे राजाभोज के ग्रंथों का ज्ञान पुनः जागृत हो सके, इस दृष्टि से संस्थान यह आयोजन कर रहा है। इस संगोष्ठी द्वारा भारत की प्राचीन काल और मध्यकाल की ज्ञान परंपरा को पुनः उपयोग में लाने का कार्य तो होगा ही, राजाभोज और उनके द्वारा बसाए गए नगरों, उनकी नगर रचना, संस्थाओं और ग्रंथों पर भी अध्ययन और शोध के अनेक नए मार्ग खुलेंगे। एसपीए के निदेशक प्रो. अजय खरे ने राजा भोज को एक उच्चकोटि का इंजीनियर, प्रशासक व लेखक बताते हुए कहा कि एक अच्छे आर्किटेक्ट को सभी भारतीय वेदों का ज्ञान होना चाहिए। श्री मनोज श्रीवास्तव वरिष्ठ आई.ए.एस. प्रमुख सचिव मुख्यमंत्री म.प्र. शासन ने भोपाल को कला की राजधानी बताते हुए कहा कि ऐसा लगता है कि भारत के इतिहास पर एक आवरण डाल दिया गया है जिसे हटाना जरूरी है। भारतीय धर्म पुराण व ग्रंथो में वैज्ञानिक तथ्य मौजूद थे जिन्हें बाद में वैज्ञानिकों ने अपनी तरह से नये सिद्धांतों का नाम दिया। इतिहास को लिखने में लोग जितना कलम का उपयोग करते हैं उतना ही उपयोग रबर का करते हैं। इस सेमिनार में देश के ख्यातिलब्ध इंजीनियर, पुरातत्वविद, इतिहासकार और वास्तुकार जिनमें श्री सी.वी. कंद, श्री एन. ताहर, श्री रहमान अली, डॉ. सुष्मिता पांडे, श्री के.जी. व्यास, श्रीमती पूजा सक्सेना. डॉ. मीरा दास ने भी

सेमिनार को संबोधित करते हुए प्रो. अजय खरे

सेमिनार को संबोधित करते हुए प्रो. विजय अग्रवाल

श्री मनोज श्रीवास्तव को सम्मानित करते प्रो. विजय अग्रवाल

संबोधित किया। इस सेमिनार में यह बात निकल कर सामने आई कि राजभोज ने ज्ञान की सभी शाखाओं का गहन अध्ययन किया था। परमार काल की संस्कृति व ज्ञान को जानना हमारे लिये जरूरी है। इस सेमिनार में भोपाल के पुरातात्विक एवं ऐतिहासिक महत्त्व पर निटर द्वारा निर्मित फिल्म ''बयान ए भोपाल'' का प्रदर्शन भी किया गया। कार्यक्रम के संयोजक प्रो. जे.पी. टेगर ने सेमिनार के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। उद्घाटन कार्यक्रम का संचालन प्रो. विशाखा व आभार प्रदर्शन डॉ. संजीव सिंह ने किया। इस अवसर पर एक स्मारिका का लोकार्पण भी किया गया। इस आयोजन में श्री संगीत वर्मा एवं श्रीमती नेहा तिवारी का विशेष सहयोग रहा।

पारंपरिक ज्ञान को सहेजने के आह्वान के साथ सेमिनार संपन्न

ग्लोबल नॉलेज के बीच कोई पार्टीशन न हो : प्रो. रे

यह राष्ट्रीय सेमिनार पारंपरिक ज्ञान को सहेजने के आह्वान के साथ संपन्न हुआ। इस सेमिनार में देश के ख्यातिलब्ध इंजीनियर, पुरातत्वविद, इतिहासकार और वास्तुकारों ने राजाभोज एवं परमार काल पर केन्द्रित अपने महत्वपूर्ण व्याख्यान दिये। समापन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि व बंगाल इंजीनियरिंग एण्ड साइंस यूनिवर्सिटी के कुलपति श्री ए.के. रे ने कहा कि ग्लोबल नॉलेज के बीच कोई पार्टीशन नही होना चाहिए। 21वीं सदी विभिन्न विषयों के समागम की सदी होगी। एसपीए के निदेशक प्रो. अजय खरे ने कहा कि इस सेमिनार में विद्यार्थियों के साथ–साथ हमने भी बहुत कुछ सीखा है। एस.पी.ए. भोपाल राजा भोज की विभिन्न संरचनाओं से संबंधित बिन्दुओं को अपने पाठ्यक्रम में शामिल करेगा। एनआईटीटीटीआर के निदेशक प्रो. विजय अग्रवाल ने कहा कि सांस्कृतिक संवेदनशीलता के साथ–साथ नई टेक्नोलॉजी को अपनाना होगा। प्रसिद्ध इतिहासकार व लेखक श्री रहमान अली ने परमार काल के किले व उनकी निर्माण की इंजीनियरिंग पर व्याख्यान दिया और कहा कि युवा वैज्ञानिकों ने दो दिन तक जिस उत्साह, तन्मयता और जागरूकता के साथ इस सेमिनार में भाग लिया है वह देश के लिए शुभ संकेत है। वरिष्ठ पुरातत्वविद डॉ. मीरा दास ने धार में स्थित लौह स्तंभों के उद्‍भव पर व्याख्यान दिया। डॉ. सुष्मिता पांडे ने राजाभोज के ''समरांगन सूत्रधार'' के महत्व व उपयोगिता पर व्याख्यान दिया। श्री संगीत वर्मा ने ''राजाभोज समग्र'' पर व्याख्यान देते हुए कहा कि भारत के ज्ञान में बहुत ताकत है। आज हमें वो राजा याद हैं जिन्होंने ज्ञान व जनता की सेवा की। स्वयं को एक सभ्यता का हिस्सा होने का बोध दुनिया का सर्वोच्च बोध है। मैं आशा करता हूँ कि जब आप इस सेमिनार से जायें तो विश्व की प्राचीनतम सभ्यता का हिस्सा होने का बोध लेकर जायें। डॉ. पूजा सक्सेना ने भीमकुंड के निर्माण को परमार काल की हाईड्रोलिक इंजीनियरिंग का बेहतरीन उदाहरण माना। आपने भोजपुर के भीमकुंड के विलुप्त होने की प्रक्रिया पर प्रकाश डाला। उन्होंने राजाभोज को एक श्रेष्ठ आर्किटेक्ट बताया। श्रीमती नेहा तिवारी ने राजाभोज की सिटी प्लानिंग को भोजपाल की केस स्टडी द्वारा रोचक तरीके से प्रस्तुत किया। प्रो. विशाखा कावथकर व नारायण व्यास ने भोजपुर मंदिर के स्थापत्य की केस स्टडी व उसकी पुरातात्विक महत्ता पर व्याख्यान दिया। श्री एन. ताहर, ने ऐतिहासिक महत्व के स्मारकों के संरक्षण पर व्याख्यान दिया। माखनलाल चतुर्वेदी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ब्रिज किशोर कुठियाला ने पारंपरिक ज्ञान को पुनः जाग्रत करने में मीडिया की भूमिका को महत्वपूर्ण बताया। समापन कार्यक्रम का संचालन प्रो. आर.पी. खम्बायत व आभार प्रदर्शन प्रो. जे.पी. टेगर ने किया।

समापन समारोह को संबोधित करते हुए प्रो. ए.के. रे

''राष्ट्रनिर्माण एवं मूल्यपरक शिक्षा' पर व्याख्यान

संवेदनशील समाज आज की सबसे बड़ी चुनौती : डॉ. सुब्बाराव जी

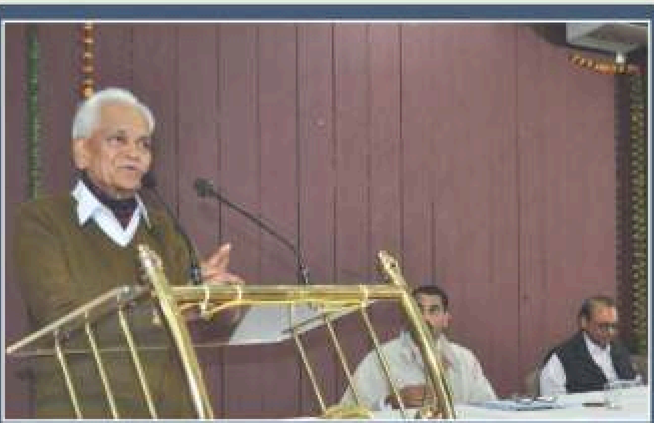

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए डॉ. सुब्बाराव

सुप्रसिद्ध गांधीवादी चिंतक एवं समाजसेवी डॉ. एस.एन सुब्बाराव ने कहा है कि यदि प्रत्येक भारतवासी प्रतिदिन एक घंटे का समय खुद के लिए और एक घंटे का समय देश के लिए दे तो इस देश को पूरी तरह से बदला जा सकता है। उन्होंने कहा कि हृदय में संवेदना, मस्तिष्क में उच्च विचार और रचनात्मकता से ही परिवर्तन संभव है। डॉ. सुब्बाराव राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, भोपाल में ''राष्ट्र निर्माण एवं मूल्यपरक शिक्षा'' विषय पर अपने विचार व्यक्त कर रहे थे। उन्होंने कहा कि सत्य और अहिंसा ऐसी चीज है जो इस देश को पूरे विश्व में गौरवान्वित करती है। लेकिन इन मूल्यों में धीरे–धीरे विघटन हो रहा है। महात्मा गांधी ने देश को आजादी दिलवाई परन्तु हम उनके सिद्धांतों पर चल नहीं पा रहे हैं। आवश्यकता इस बात की है कि पूरे भारतवासी इसे प्राणवायु की तरह ग्रहण करें और जब वह श्वास छोडे तो उनके मन में यह विचार होना चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति का कल्याण हो, पूरा समाज स्वस्थ हो, यदि ऐसा किया गया तो पूरे विश्व का कल्याण सम्भव है। डॉ. सुब्बाराव ने युवाओं का आह्वान करते हुए कहा कि पूरे विश्व में प्रत्येक व्यक्ति को एक दिन अपने देश तथा समाज के लिए देना चाहिए। अपने हाथों से कुछ न कुछ साफ–सफाई करना चाहिए, बच्चों को पढ़ाना चाहिए यही सच्ची देश सेवा होगी। उन्होंने कहा कि दुनिया में कई लड़ाइयां धर्म के नाम पर लड़ी गई हैं लेकिन धर्म के साथ शांति केवल भारत में है। महात्मा गांधी की चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि भारत की आजादी के बाद जब गांधीजी से पूछा गया कि आजाद भारत में प्राथमिकता के आधार पर क्या होना चाहिए तो गांधीजी ने कहा सबसे प्रथम तो भेदभाव जाना चाहिए, शराब बंदी होना चाहिए, रोजगार होना चाहिए। गांधीजी से फिर पूछा गया तो उन्होंने कहा कि मुझे चिंता है कि आजाद भारत में जो लोग उच्च पद पर आसीन होंगे कहीं उनमें संवेदनशीलता खत्म न हो जाए। आज भी हमारे लिए यही चिंता का विषय है। इस मौके पर उन्होंने जय हिन्द की जगह जय जगत का नारा दिया। आज हमें क्षेत्रीयता को छोड़कर ''वसुदेव कुटुम्बकम्'' की भावना को आत्मसात करना चाहिए। समाज को नई दिशा देने में युवाओं को सत्त प्रयासरत रहते हुए हाथ से हाथ मिलाकर काम करने की इच्छा रखना चाहिए। युवा शांति के सैनिक व सामाजिक कार्यों के साथ नैतिक विषयों से भी जुड़ें। मैं डॉक्टर बनूँ, कलेक्टर बनूँ, इंजीनियर बनूँ लेकिन इन सबका कोई अर्थ नहीं है यदि मुझमें संवेदनशीलता ही न हो तो सब खत्म हो जाएगा। वरिष्ठ पत्रकार लज्जा शंकर हरदेनिया जी ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि आज ही के दिन महात्मा गांधी की क्रूर हत्या की गई थी परन्तु गांधीजी ने जो सपना देश के लिए देखा था। वह पूरा नहीं हो सका। इसके लिए देश के नौजवानों की मुख्य भूमिका होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि जब तक साम्प्रदायिकता और जातिवाद के जहर से देश मुक्त नहीं होगा तब तक देश विकास नहीं कर सकता। इसलिए जरूरत है कि इस देश के नौजवान संकल्प लें कि वे एक जाति मुक्त समाज की स्थापना में अपना योगदान देंगे। संस्थान के निदेशक प्रो. विजय अग्रवाल ने प्रारंभ में कहा कि सुब्बाराव जी का संस्थान में आना एक महत्पूर्ण घटना है कि हम अपने विद्यार्थियों को सिर्फ बेहतर तकनीकी विशेषज्ञ ही नहीं अपितु संवेदना के धरातल पर हम एक सृजन धर्मी का निर्माण भी करना चाहते हैं उसकी उपस्थिति समाज के निर्माण में सार्थक हो। संस्थान में यह पहला व्याख्यान है परन्तु श्रृंखलाबद्ध रूप से इसी तरह के कई महत्वपूर्ण व्याख्यान आयोजित किए जाएंगे। कार्यक्रम में डॉ. सुब्बाराव ने दो भजन भी सुनाए जिससे पूरा सभागार मंत्रमुग्ध हो गया। डॉ. सुब्बाराव का परिचय महेन्द्र नागर ने दिया। इस अवसर पर संस्थान के शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी, प्रशिक्षणार्थी एवं छात्रगण तथा बाहर से आए कई गणमान्य व्यक्ति भी मौजूद थे। संस्थान के प्राध्यापक प्रो. राजेश खम्बायात ने कार्यक्रम का संचालन किया।

डॉ. सुब्बाराव को सम्मानित करते प्रो. विजय अग्रवाल
साथ में वरिष्ठ पत्रकार श्री एल. एस. हरदेनिया

''उच्च शिक्षा एवं नैतिक मूल्य'' विषय पर व्याख्यान आयोजित

अन्याय के खिलाफ सवाल उठाना हमारी नैतिक जिम्मेदारी : तीस्ता सीतलवाड़

कार्यक्रम को संबोधित करतीं श्रीमती तीस्ता सीतलवाड़

प्रसिद्ध पत्रकार एवं समाज वैज्ञानिक श्रीमती तीस्ता सीतलवाड़ ने कहा है कि आज समाज के हर क्षेत्र में नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है। आज बच्चा 13 वर्ष तक स्कूल में पढ़ता है लेकिन स्कूल का पाठ्यक्रम क्या एक अच्छा इंसान बनाने के लिये पर्याप्त है ? उन्होंने सामाजिक समानता, दलित, हिन्दु, मुस्लिम, आदिवासी से जुड़े मुद्दों पर बेबाकी से अपनी राय रखते हुये कहा कि पाबंदी किसी समस्या का समाधान नहीं है। नैतिक मूल्यों की स्थापना में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण है। कोई भी सरकार अच्छे शिक्षक तैयार करने का अभियान क्यों नहीं चलाती। नये भारत के निर्माण के लिये शिक्षण को आदर्श व्यवसाय बनाकर युवाओं को आकर्षित करना होगा। तालीम वास्तव में क्या होना चाहिए और हम क्या दे रहे हैं ? यह विचार उन्होंने राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षक एवं अनुसंधान संस्थान में शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि युवाओं के सपने हवाओं से नहीं बनते उनमें समाज एवं परिवार की अपेक्षाओं की छाप होती है। 16 दिसंबर की दिल्ली घटना के बाद युवाओं में जिस तरह से महिलाओं की सुरक्षा के प्रति जो चेतना आई है वह शुभ संकेत है। आज इंजीनियरिंग, मेडिकल, तकनीकी शिक्षा आदि में समाज विज्ञान का कुछ अंश होना चाहिए। उच्च शिक्षण संस्थाओं की यह भी जिम्मेदारी है कि वह स्कूल के पाठ्यक्रम पर भी ध्यान दें। आज खुद को चुनौती देने का समय है। विभिन्न समस्याओं का समाधान सिर्फ बातचीत से ही संभव है। समस्याओं के लिये किसी एक वर्ग को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है। आपने भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा, साम्प्रदायिकता, जातिवाद, भ्रष्टाचार, महिला हिंसा आदि विषयों पर प्रश्न उठाते हुये कहा कि इन समस्त बुराईयों पर शिक्षण संस्थाओं में चर्चा क्यों नहीं होना चाहिए? यदि आप अकेले आवाज उठते हैं तो हो सकता कि आप किसी का निशाना बन जायें। आप अच्छे लोगों का समूह बनाकर अपनी बात रखें तो अच्छा होगा। समस्याओं का हल कोई बाहर से नहीं देगा। हमें स्वयं अधिकारों के लिए लड़ना होगा और कर्तव्यों के प्रति सजग होना होगा। आज शिक्षक को अपने अंदर मशाल जलानी होगी। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक प्रो. विजय अग्रवाल ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि पिछले 10–15 वर्षो में सुश्री तीस्ता सीतलवाड़ ने देश में सामाजिक चेतना जाग्रत करने में जो भूमिका निभाई है वह अभिनंदन योग्य है। आज वैश्विकरण व बाजारीकरण के इस युग में हमारा समाज भौतिकता के इर्द–गिर्द घूम रहा है। भौतिकता के बुनियाद पर खड़ा समाज कितनें दिनों टिकेगा ? आज नैतिक मूल्यों का बहुत तेजी से पतन हुआ है। समाज में हो रहे परिवर्तन चिंता का विषय है। भारत एक अध्यात्म गुरू रहा है। आज समाज में एक अच्छे इंसान बनाने के साथ समाज से उद्दंडता समाप्त करने की भी आवश्यकता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये श्री लज्जाशंकर हरदेनिया जी ने कहा कि अंग्रेजी माध्यम से पढ़ने वाले यह बच्चे नैतिक मूल्य क्या सीखेगें ? मां की कोख से सारे मूल्य पैदा होते हैं। आज मीडिया में जितना अनैतिक धन है उतना कहीं नहीं है। समाचार पत्र को चलाने के लिये सरकार को पैसा देना चाहिए। मीडिया में जब तक सही पैसा नहीं आयेगा तब तक अच्छी खबरें पढ़नें को नहीं मिलेगी। इस कार्यक्रम में संस्थान परिवार के अधिकारी/कर्मचारियों सहित शहर के गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन प्रो. आर. पी. खम्बायत ने किया।

श्रीमती तीस्ता सीतलवाड़ को सम्मानित करते प्रो. विजय अग्रवाल

दक्षेश (SAARC) देशों के संदर्भ में भारत की विदेश नीति पर व्याख्यान आयोजित

एक ध्रुवीय से बहुध्रुवीय ताकत की ओर बढ़े विश्व : प्रो. रामशरण जोशी

एनआईटीटीटीआर, भोपाल में दिनांक 18 फरवरी 2013 को महात्मा गांधी इंटर नेशनल यूनिवर्सिटी, वर्धा के प्रोफेसर एवं वरिष्ठ पत्रकार डॉ. रामशरण जोशी का ''दक्षेश (SAARC) देशों के संदर्भ में भारत की विदेश नीति'' विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया। इस अवसर पर श्री जोशी ने भारत की विदेश नीति के क्रमिक विकास व क्रमिक परिर्वतन पर बोलते हुए कहा कि आज दक्षिण एशिया में अविश्वास की स्थिति सबसे बड़ी समस्या है। उन्होंने विदेश नीति को स्वतंत्र बनाने को आज के समय की सबसे बड़ी चुनौती माना है। उन्होंने दक्षिण एशिया के विभिन्न देशों की समस्याओं पर प्रकाश डालते हुये कहा कि इस क्षेत्र में हथियारों की दौड़ को रोकना, कट्टरपंथ व आतंकवाद को समाप्त करना, गुटनिरपेक्ष आंदोलन को फिर से प्रभावी बनाना, व दुनिया को एक ध्रुवीय के स्थान पर बहुध्रुवीय ताकत के रूप में विकसित करना समय की मांग है। हम वैश्विकरण पर विश्वास करते हैं लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि हम अमेरिका के शरणागत हो जायें या उसके पिछलग्गू बनें। आपने कहा कि पूर्व में दुनिया दो ध्रुवीय थी जिसमें अमेरिका एवं सोवियत संघ का वर्चस्व था लेकिन सोवियत संघ के विघटन के बाद की स्थिति में भारत की विदेश नीति में महत्वपूर्ण परिर्वतन आया है। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में भारत की उपेक्षा नहीं की जा सकती। आपने पंडित जवाहर लाल नेहरू, इंदिरा गांधी, राजीव गांधी के समय पर चर्चा करते हुए कहा कि हमारे सामने दोनों ध्रुवों के बीच संतुलित विदेश नीति पर चलना चुनौतिपूर्ण था। प्रो. जोशी ने दक्षेश देशों की राजनैतिक अस्थिरता व ज्वलंत मुद्दों पर भी चर्चा करते हुए कहा कि भारत अनुभव सम्पन्न व बड़ा देश है। अतः भारत की विदेश नीति ऐसी हो कि वह इन सब देशों को एक जुट रख सके। जब यूरोपियन देश एक नया संघ व मौद्रिक नीति बना सकते हैं तो क्या दक्षिण एशिया में इस प्रकार की व्यवस्था संभव है ? दक्षेश देश अपनी समस्याओं व मतभेदों को दरकिनार कर कोई नई व्यवस्था बनाये तो सभी का हित होगा। आपने पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, भूटान, मालद्वीप, श्रीलंका, अफगानिस्तान की राजनैतिक, आर्थिक व सामाजिक स्थिति पर चर्चा करते हुये कहा कि यहां पर लोकतांत्रिक व्यवस्था का कमजोर होना हमारे हित में नहीं है। मध्य एशिया में महत्वपूर्ण खनिज सम्पदा है और अमेरिका की नजर उस पर है। दुनिया को कब्जे में रखना अमेरिका का उद्‌देश्य है। आज यूरोप पूरी तरह से सुरक्षित क्यों है यह सोचने की बात है। 2020 तक भारत और चीन दो बड़ी अर्थव्यवस्था होंगी। चीन तेजी से बहुत बड़ी अर्थव्यवस्था बन रहा है। भारत उसके मुकाबले पीछे है। अमेरिका भारत को चीन के खिलाफ खड़ा करना चाहता है। दुनिया इस बात को मानती है कि भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है। हमने आधुनिकीकरण तो कर लिया लेकिन विचारों में आधुनिकता नहीं ला पाये। संस्थान के निदेशक प्रो. विजय अग्रवाल ने प्रो. रामशरण जोशी का स्वागत करते हुये कहा कि विदेश नीति में समय–समय पर जो परिवर्तन हुए हैं उस पर प्रो. जोशी ने पैनी निगाह रखी है। प्रो. जोशी ने देश के महत्वपूर्ण राजनेताओं के साथ काम किया है और वे कई देशों में घूम चुके हैं। आज जब भारत महाशक्ति के रूप में उभर रहा है अतः इस विषय पर चर्चा करना एवं युवा पीढ़ी को विदेश नीति से अवगत कराना प्रासंगिक है। कार्यक्रम का संचालन प्रो. आर.पी. खम्बायत ने किया। इस कार्यक्रम में संकायगण, अधिकारी, कर्मचारीगण के साथ–साथ शहर के गणमान्य नागरिक भी उपस्थित थे।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रो. रामशरण जोशी

प्रो. जोशी का स्वागत करते प्रो. विजय अग्रवाल

शोध में युवा वैज्ञानिकों को प्रोत्साहन जरुरी : प्रो. गिरजेश गोविल

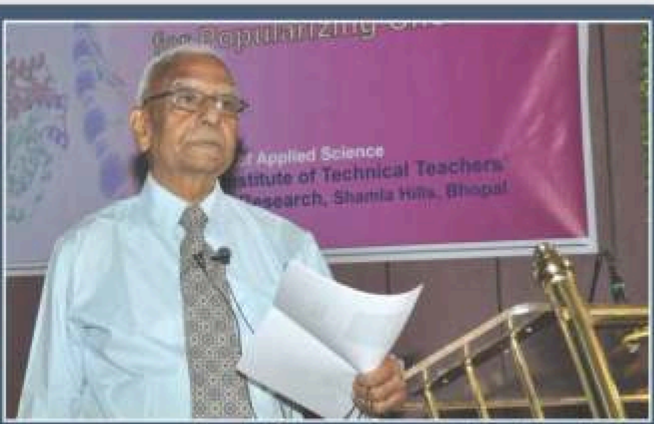

व्याख्यान माला को संबोधित करते हुए प्रो. गिरजेश गोविल

प्रो. गिरजेश गोविल को स्मृति चिह्न प्रदान करते प्रो. विजय अग्रवाल

राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, भोपाल में 27 जनवरी 2013 को विज्ञान विभाग द्वारा एस.एस. भटनागर मेमोरियल व्याख्यान श्रृंखला आयोजित की गई। प्रो. गिरजेश गोविल ने इस अवसर पर कहा कि यदि भारत अपने युवा वैज्ञानिकों के लिए विज्ञान एवं अन्वेषण के लिये उतनी ही धनराशि व्यय करें जितनी कि जापान, कोरिया और चीन करते हैं तो हमारा देश विश्वस्तरीय परिणाम दे सकता है आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने विद्यार्थियों में विज्ञान और तकनीक के लिये रूचि जाग्रत कर सकें और उन्हें जीवनयापन के लिये अवसर भी उपलब्ध करायें। यह विचार टाटा इंस्टीटयूट ऑफ फण्डामेंटल रिसर्च मुबंई के वरिष्ठ वैज्ञानिक प्रो. गिरजेश गोविल ने प्रथम व्याख्यान ''NMR : A Journy from Chemistry to Biology'' व द्वितीय व्याख्यान ''Nobel Prize in Chemistry to Whom & Why'' विषय पर केन्द्रित था। प्रो. गोविल ने अपने व्याख्यान में NMR तकनीक का आविष्कार एवं सिद्धांत पर बोलते हुए कहा कि आज विभिन्न विषयों के बीच की सीमाएँ समाप्त हो चुकी हैं एवं अंतर्विषयी सोच कारगर है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का उद्देश्य जीवन की विभिन्न समस्याओं के समाधान पर केन्द्रित होना चाहिए। उन्होंने केमेस्ट्री एवं लाइफ साइंसेस में NMR के महत्त्व व विश्व में इस विषय पर चल रहे शोध कार्यो का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया। अपने द्वितीय व्याख्यान में प्रो. गोविल ने केमेस्ट्री के क्षेत्र में 1991 से लेकर 2012 तक मिले नोबल पुरस्कार प्राप्त वैज्ञानिकों के शोध कार्यो पर चर्चा की। आपने कहा कि यह दुर्भाग्य है कि विज्ञान के क्षेत्र में नोबल पुरस्कार विजेताओं में सिर्फ एक भारतीय का नाम है। आपने अमेरिका, यूरोप एवं एशिया क्षेत्र के वैज्ञानिकों को मिले नोबल पुरस्कार के आंकड़े प्रस्तुत करते हुए कहा कि आज युवा वैज्ञानिकों को प्रोत्साहन देना बहुत जरूरी है। आज भारत को विज्ञान के क्षेत्र में विश्व का नेतृत्व करना चाहिए। आपने दर्शकों के प्रश्नों का बेबाकी एवं रोचक तरीके से उत्तर दिया। संस्थान के निदेशक प्रो. विजय अग्रवाल ने व्याख्यान माला के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुये कहा कि इस प्रकार के व्याख्यान से तकनीकी शिक्षण संस्थानों के शिक्षक, विद्यार्थी व युवा वैज्ञानिकों को यह जानकारी मिलती है कि देश में किस तरह की रिसर्च हुई है एवं उसका स्तर क्या है। इसके साथ ही विज्ञान की अलग–अलग शाखाओं से जुड़े वरिष्ठ वैज्ञानिकों से युवाओं को सीधे संवाद करने का अवसर मिलता है। आपने युवा वैज्ञानिकों का आह्वान किया कि पश्चिम की तरफ देखने से कुछ नहीं होगा। हमारे बीच में भी कई ऐसे वैज्ञानिक हैं जिन्होंने अपने शोध कार्यो की मिसाल दुनिया में कायम की है। मुझे खुशी है कि प्रो. गोविल का नाम NMR के क्षेत्र में विश्व के जाने–माने वैज्ञानिकों में शुमार है। इस व्याख्यान माला को विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग भारत सरकार द्वारा प्रायोजित किया जा रहा है। इस व्याख्यान में संस्थान परिवार के संकाय सदस्य, अधिकारी/कर्मचारी सहित शहर के विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों के शिक्षक, विद्यार्थी व शोध छात्र उपस्थित थे। कार्यक्रम का आभार प्रदर्शन प्रो. डी.एस. करौलिया एवं संचालन डॉ. अंजना तिवारी ने किया।

विज्ञान विभाग के संकाय सदस्यों के साथ प्रो. गिरजेश गोविल

संचालक मण्ड़ल की बैठक सम्पन्न

संचालक मण्डल की बैठक को संबोधित प्रो. अमिताभ घोष

संस्थान के संचालक मण्ड़ल की 124वीं बैठक दिनांक 23 जनवरी 2013 को भोपाल में सम्पन्न हुई। उक्त बैठक में अध्यक्ष, संचालक मंडल प्रो. अमिताभ घोष, भारत सरकार के प्रतिनिधि, गुजरात राज्य के तकनीकी शिक्षा संचालक के प्रतिनिधि सदस्य, सचिव प्रो. विजय अग्रवाल, श्री विकास गदरे, डॉ. एस.के. महाजन, डॉ. अरुण नाहर, डॉ. के. के. जैन, प्रो. आर.बी. शिवगुण्डे, श्री लालमन सॉमा शामिल थे। इस बैठक में संस्थान की प्रगति से संबंधित महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये।

शिक्षा एवं अनुसंधान विभाग के नये भवन का उद्घाटन

राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान भोपाल के अध्यक्ष, संचालक मण्डल प्रो. अमिताभ घोष ने शिक्षा एवं अनुसंधान विभाग के नये भवन का उद्घाटन किया। संस्थान के निदेशक प्रो. विजय अग्रवाल के अनुसार इस भवन में विभागीय आवश्यकताओं के अनुसार लेटेस्ट कम्प्यूटर्स, सॉफ्टवेयर्स, क्लासरूम, फेकल्टी रूम उपलब्ध कराये गये हैं। इस अवसर पर डॉ. एस.के. सक्सेना, प्रो. आर.पी. खम्बायत, प्रो. के.एम. रस्तोगी, प्रो. डी.एस. करौलिया, प्रो. आर.के. दीक्षित एवं प्रो. किरण सक्सेना, लेखाधिकारी श्री डी.के. तिवारी, कन्सलटैण्ट (प्रशासन) श्री एस.एस. अस्थाना एवं अधिकारी/कर्मचारीगण उपस्थित थे।

नये भवन का उद्घाटन करते प्रो. अमिताभ घोष

बयान-ए-भोपाल फिल्म का निर्माण

श्री राजीव गोहिल को बधाई देते प्रो. अमिताभ घोष

हर शहर अपने दामन में अपनी पूरी दुनिया समेटे रहता है और उसकी अपनी यह दुनिया उसके अपने लोगों के श्रम और कौशल से निर्मित होती है। आसपास के शहरों और अलग–अलग जगहों से बसने आये लोगों के अपने–अपने प्रभाव भी इस दुनिया पर अपने नक्श उकेरते रहते हैं। हर शहर इसीलिये अपनी विशिष्टताएँ भी लिये होता है और बहुत सारे मिश्रित प्रभाव भी।

सारी मनुष्य सभ्यताएँ अलग–अलग भौगोलिकताओं में इसी तरह से बनती और संस्कारित होती हुई विकसित होती हैं। समय उन्हें नष्ट भी करता है, और पुनर्रचित भी। समय का यही विशिष्ट बोध इतिहास का भी निर्माण करता है। इसीलिये इतिहास सिर्फ राजाओं के उत्थान और पतन की कहानी मात्र न रहकर कुछ और भी बनता है। अलग–अलग काल खण्डों में निर्मित किले, महल, बावड़ियां उक्त काल विशेष की उत्पत्ति, सम्पत्ति या निर्मिति मात्र न रहकर धरोहर बन जाती है। इस धरोहर को आज इतिहास के बेहद सामान्यीकृत काल वर्गीकरण यानि प्राचीन, मध्यकाल और आधुनिक के अन्तर्गत देखना और दिखाना महत्त्वपूर्ण नहीं है महत्त्व सिर्फ इस बात का है कि क्या स्थापत्य के माध्यम से मनुष्य के कालात्मक कौशल, सौन्दर्य के लिये उसकी बेपनाह चाहत, आसपास के वातावरण के लिये उसकी अन्तर्दृष्टि और अलग–अलग संस्कृतियों के साथ तादात्म्य और ग्रहणशीलता की ताकत को समझाया जा सकता है। इन सभी के उत्तर सकारात्मक ही हैं और एनआईटीटीआर की फिल्म बयान–ए–भोपाल इसी को देखने–दिखाने का प्रयास है।

इस फिल्म का छायांकन, चित्रपट और निर्देशन श्री राजीव गोहिल ने किया है इस फिल्म की अवधारणा निदेशक प्रो. विजय अग्रवाल की है। इस फिल्म की डीवीडी का लोकार्पण संस्थान के अध्यक्ष संचालक मंडल प्रो. अमिताभ घोष ने किया था। 20 जनवरी को संस्थान के सभागार में इस फिल्म का प्रदर्शन किया गया था। इस फिल्म की देशभर के संस्थानों के प्रतिनिधि, इतिहासकार छात्र/छात्राओं ने सराहना की है। संस्थान परिवार ने श्री राजीव गोहिल को इस फिल्म के लिये बधाई प्रेषित की है।

समय की मांग के अनुसार तय करना है अपनी दिशा : प्रो. अग्रवाल

नववर्ष कार्यक्रम को संबोधित करते प्रो. विजय अग्रवाल

एनआईटीटीटीआर भोपाल के सभागार में नववर्ष के उपलक्ष्य में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। निदेशक प्रो. विजय अग्रवाल ने इस अवसर पर संस्थान परिवार को नववर्ष की शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि आज आत्मचिंतन कर पिछले वर्ष की उपलब्धियों व कमियों तथा भविष्य की योजनाओं को मूर्तरूप देने के संकल्प लेने का भी समय है। आपने कहा कि हम सब की जो भी जिम्मेदारी है उसे ईमानदारी से पूर्ण करने का संकल्प लें। वर्तमान समय एक शिक्षक के लिये चुनौतीपूर्ण समय है जब उसे शिक्षण के साथ–साथ संस्कारों का वाहक भी बनना है। आज शिक्षक को कई जिम्मेदारियों का निर्वहन एक साथ करना है। उन्होंने मां का उदहारण देते हुये कहा कि एक मां जिस तरह एक साथ एक समय पर कई जिम्मेदारियों को पूर्ण सफलता के साथ पूरा करती है उसी तरह एक अच्छा प्रबंधक बनने के लिये मां जैसा दिल चाहिए। आपने वर्तमान शिक्षा की चुनौतियों से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर चर्चा करते हुए कहा कि हमें समय की मांग के अनुसार अपनी दिशा को तय करना है। इस अवसर पर जया नर्गिस ने अपनी गजलों की सुन्दर प्रस्तुति देते हुये कहा कि गजल में कुछ ऐसी चीजें होती हैं जिन्हें झुठलाया नहीं जा सकता। प्रो. अस्मिता खजांची ने अपनी कविता के माध्यम से ''दामिनी'' को श्रद्धांजली देते हुए कहा कि इस घटना के बाद ऐसा लगा की हमारी सरकार कितनी संवेदनहीन व जनता कितनी संवेदनशील है इस अवसर पर प्रो. के.एम. रस्तोगी, प्रो. डी.एस. करौलिया, प्रो. आर.के. दीक्षित, प्रो. व्ही.एच. राधाकृष्णन, प्रो. के. के. जैन आदि ने भी सम्बोधित किया। इस अवसर पर संस्थान के संकाय सदस्य, अधिकारी, कर्मचारी भी उपस्थित थे।

परामर्श विषय पर एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला

''परामर्श'' विषय पर 16 जनवरी 2013 को एक दिवसीय प्रशिक्षण–सह कार्यशाला आयोजित की गयी। यह कार्यशाला राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वाधान में आयोजित की गयी थी। कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. किरण सक्सेना ने ''परामर्श'' और उससे जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला एव रोचक गतिविधियों द्वारा प्रतिभागियों को परामर्श का महत्व एवं स्वयं का मूल्यांकन करने हेतु प्रेरित किया। इस अवसर पर कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि डॉ. एस.एन.गुप्ता (रिटायर्ड–ब्रिगेडियर), सह–प्रशिक्षक के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने बताया कि ''हम कैसे सोचते हैं'' और हमारे मस्तिष्क में सचेत तथा अचेत के अलग–अलग भाग होते हैं और सोचने की प्रक्रिया पर मूलरूप से अचेत अवस्था वाला भाग ज्यादा प्रभावी रहता है। स्वयं के मूल्यांकन के लिये यह आवश्यक है कि मनुष्य अपने मस्तिष्क की अचेत अवस्था से प्रयुक्त होने वाली सोच को नियंत्रित कर सके। इस कार्यक्रम में कुल 12 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिसमें संस्थान के संकाय सदस्य, कर्मचारी एवं दूसरे संस्थानों से आये वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं संकाय सदस्य उपस्थित हुए।

एडवांसेस इन केमेस्ट्री एण्ड फार्मास्यूटिकल साइंस पर कार्यक्रम

संस्थान के विज्ञान विभाग द्वारा 25 फरवरी 2013 से 1 मार्च 2013 ''एडवांसेस इन केमेस्ट्री एण्ड फार्मास्यूटिकल साइंस पर कार्यक्रम'' प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में प्रशिक्षणार्थियों को केमेस्ट्री व फार्मेसी के क्षेत्र में उपलब्ध आधुनिक साफ्टवेयर पर प्रशिक्षण प्रदान किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अभिलाष ठाकुर व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. बशीरुल्ला शेक ने योगदान दिया।

कम्युनिटी कॉलेज के संवर्धन के लिए अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित

मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा कम्युनिटी कॉलेज के संवर्धन के लिए नई दिल्ली में दिनॉक 6 से 7 फरवरी को दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया। इस सम्मेलन का विषय "Mainstreaming Skills in Education-creating relevant Human Resource through Community Colleges" था। इस कार्यक्रम का उद्घाटन मानव संसाधन विकास मंत्री डॉ पल्लमराजू द्वारा किया गया। इस अवसर पर मंत्रालय के उच्च शिक्षा सचिव श्री अशोक ठाकुर, संयुक्त सचिव डॉ अनन्त कुमार सिंह तथा पूरे देश से आये लगभग 1000 प्रतिनिधियों ने भाग लिया, जिसमें पॉलिटेक्निक, इंजीनियरिंग कॉलेज, विश्वविद्यालय और शैक्षणिक संस्थान शामिल थे। इस सम्मेलन में संस्थान के निदेशक प्रो. विजय कुमार अग्रवाल को भी आमंत्रित किया गया। इस अवसर पर अमेरिका, कनाडा, न्यूजीलैंड, जर्मनी, ब्रिटेन तथा भारत से आये संस्थाओं द्वारा कौशल उन्नयन के क्षेत्र के लिए किये जा रहे कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी गई। मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा यह आयोजन देश में चिन्हित 200 कम्युनिटी महाविद्यालयों की शुरुआत के लिए किया गया।

औद्योगिक सुरक्षा प्रबंधन पर प्रशिक्षण

संस्थान के अनुप्रयुक्त विज्ञान विभाग द्वारा 07 से 11 जनवरी 2013 तक ''औद्योगिक सुरक्षा प्रबंधन'' विषय पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में पश्चिमी क्षेत्रों के पॉलिटेक्निक/इंजीनियरिंग महाविद्यालयों के शिक्षकों ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षणार्थियों को औद्योगिक सुरक्षा की अवधारणा के साथ औद्योगिक सुरक्षा प्रबंधन के संबंध में विस्तार से समझाया गया। प्रशिक्षणार्थियों को भोपाल में स्थित यूनियन कार्बाईड कारखाने में भ्रमण भी कराया गया। भ्रमण के दौरान श्री रिजवान कुरैशी भी उपस्थित थे। विषय विशेषज्ञ के रूप में श्री अविनाश कक्कर एवं डॉ. डी.के. सिंह ने योगदान दिया। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. पी.के. पुरोहित थे।

कम लागत के उपकरणों का निर्माण

संस्थान के अनुप्रयुक्त विज्ञान विभाग द्वारा 4 से 8 फरवरी 2013 तक ''भौतिकी विषय के कम लागत के उपकरणों का निर्माण'' विषय पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में प्रशिक्षणार्थियों को प्रयोगशाला कार्य के उद्देश्य, उपयोगिता प्रबंधन एवं विभिन्न प्रयोगों के निर्माण पर प्रशिक्षण के साथ–साथ आधुनिक प्रयोगशाला का भ्रमण भी कराया गया। इस कार्यक्रम में मध्यप्रदेश एवं महाराष्ट्र के प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम के संयोजक प्रो. पी.के. पुरोहित थे।

शोध पत्र लेखन पर प्रशिक्षण

संस्थान के अनुप्रयुक्त विज्ञान विभाग द्वारा दिनांक 11 से 15 फरवरी 2013 तक ''शोध पत्र लेखन'' विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षणार्थियों को शोध, शोध के प्रकार, डाटा संग्रहण, विश्लेषण, प्लेगरीज़्म, कॉपीराइट, शोध विधियाँ, रिसर्च केस स्टडी, इम्पेक्ट फेक्टर एवं उससे जुड़े हुए अन्य विषयों पर प्रशिक्षण दिया गया। इस कार्यक्रम के समन्वयक प्रो. पी.के. पुरोहित थे। संकाय सदस्य के रूप में डॉ. दीपक सिंह, डॉ. अभिलाष ठाकुर ने सहयोग प्रदान किया।

गतिविधियां चित्रमय झांकी

भवन सामग्री एवं निर्माण की नवीनतम विधियों पर प्रशिक्षण

संस्थान के सिविल एवं पर्यावरण इंजीनियरिंग विभाग द्वारा 7 से 18 जनवरी 2013 तक भवन सामग्री एवं निर्माण की नवीनतम विधियों पर दो सप्ताह का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। प्रथम सप्ताह में नई भवन सामग्रियों के बारे में जानकारी दी गई तथा सम्राट अशोक तकनीकी संस्थान, विदिशा के भवन निर्माण केन्द्र का भ्रमण भी कराया गया। द्वितीय सप्ताह में भवन निर्माण की नई तकनीकी के बारे में जानकारी दी गई। प्रतिभागियों को संस्थान में हो रहे विभिन्न निर्माण कार्यो और प्रयुक्त तकनीकों का अवलोकन कराया गया। प्रथम सप्ताह के संकाय सदस्य प्रो. ए.के. जैन एवं संयोजक प्रो. एम.सी. पालीवाल थे। द्वितीय सप्ताह के संयोजक प्रो. के.के. पाठक थे। प्रो. एस.के. राय ने भी इस कार्यक्रम में अपना योगदान दिया।

टोटल स्टेशन एवं जी.पी.एस. पर प्रशिक्षण

संस्थान के सिविल एवं पर्यावरण इंजीनियरिंग विभाग द्वारा 04 से 08 फरवरी 2013 तक ''टोटल स्टेशन एवं जी.पी.एस.'' फील्ड सर्वेक्षण में उपयोग विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षणार्थियों को फील्ड सर्वेक्षण में उपयोग में लाये जाने वाले आधुनिक उपकरणों एवं सॉफ्टवेयर की जानकारी दी गई। इस कार्यक्रम के समन्वयक एम.सी. पालीवाल थे।

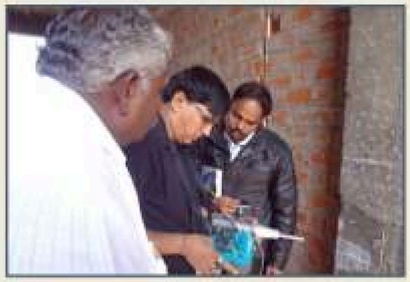

अविनाशी परीक्षण पर कार्यक्रम

सिविल एवं पर्यावरण अभियांत्रिकी विभाग द्वारा ईएमई बैरागढ़ में निर्माणधीन 150 बेड की मिलिट्री हास्पिटल की गुणवत्ता निर्धारण हेतु अविनाशी परीक्षण किया गया। यह परीक्षण दिनांक 12 फरवरी 2013 को मिलिट्री इंजीनियरिंग सर्विसेस के अनुरोध पर किया गया।

"नगरीय निकायों के अभियंताओं" का प्रशिक्षण

सिविल एवं पर्यावरण अभियांत्रिकी विभाग एवं नगरीय प्रशासन विभाग म.प्र. ने संयुक्त रूप से नगरीय निकायों के अभियंताओं के लिए 28 फरवरी से 2 मार्च 2013 के बीच जल वितरण एव प्रबंधन विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम में विभिन्न निकायों के 30 अभियंताओं ने भाग लिया। प्रशिक्षण के दौरान जल वितरण एवं प्रबंधन की नयी विधियों और चुनौतियां पर विस्तृत जानकारी दी गयी। नगरीय प्रशासन विभाग के आयुक्त श्री संजय शुक्ला ने प्रतिभागियों को प्रशिक्षण प्रमाण पत्र वितरित किये। इस कार्यक्रम के संयोजक प्रो. के.के. पाठक थे एवं डॉ. आर. के. दीक्षित ने संकाय सदस्य के रुप में योगदान दिया। नगरीय प्रशासन विभाग की ओर से डॉ. एच. एम. मिश्रा ने समन्वय किया।

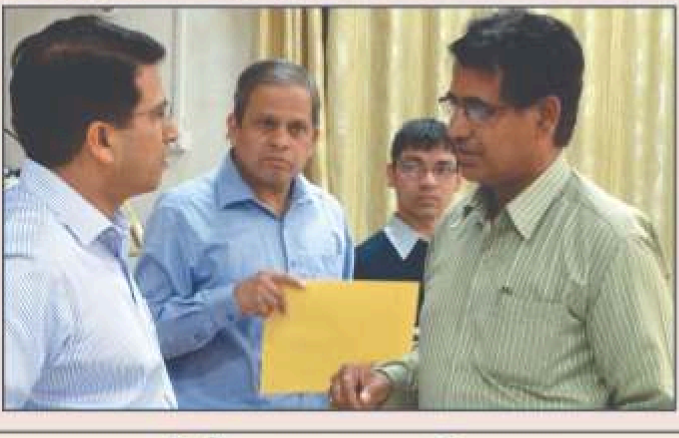

फाइनाइट एलीमेन्ट मेथड एण्ड इट्स एप्लीकेशन पर प्रशिक्षण

सिविल एवं पर्यावरण अभियांत्रिकी विभाग ने 11–22 फरवरी 2013 के बीच फाइनाइट एलीमेंट एण्ड इट्स एप्लीकेशन'' का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। प्रथम सप्ताह में प्राथमिक एवं द्वितीय सप्ताह में विकसित विषयों पर प्रशिक्षण दिया गया। विषयिक जानकारी के साथ–साथ प्रतिभागियों को संस्थान में उपलब्ध फाइनाइट एलीमेन्ट साफ्टवेयरों, एनालिस, अवेकस का अभ्यास भी कराया गया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. के.के. पाठक तथा प्रो. आर.के. दीक्षित थे।

तकनीकी छात्रों के रोजगार अवसर बढ़ाने पर प्रशिक्षण

विस्तार केन्द्र गोवा में 11 से 15 फरवरी 2013 तक ''तकनीकी शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों के लिये रोजगार'' के अवसर बढ़ाने पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में गोवा की विभिन्न तकनीकी संस्थाओं के शिक्षकों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में उद्योग व विभिन्न संस्थानों के विशेषज्ञों जिनमें कर्नल एम.बी. कामत, श्री संजय वाले, श्री मनीश गोसालिया, श्री ग्रेसियानों गोम्स आदि शामिल हैं ने प्रशिक्षण प्रदान किया। कार्यक्रम के संयोजक प्रो. ऐलन संजय रोचा थे। संकाय सदस्य के रूप में प्रो. सी.के. चुघ ने योगदान दिया।

डेवलपमेन्ट राईट एटीट्यूट पर प्रशिक्षण

विस्तार केन्द्र गोवा में 7 से 11 जनवरी 2013 तक ''डेव्लेपमेन्ट राईट एटीट्यूट'' विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में श्री लुईस आर फर्नाडिस, श्री गिरीश सरदेसाई, डॉ. आशीष रेगे ने विशेषज्ञ के रूप में व्याख्यान दिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम के समन्वयक प्रो. एलेन संजय रोचा थे।

स्किल डेवलपमेन्ट इन स्टूडेन्ट पर प्रशिक्षण

विस्तार केन्द्र गोवा में 21 से 25 जनवरी 2013 तक ''स्किल डेवलेपमेन्ट इन स्टूडेन्ट'' विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में पॉलिटेक्निक/ इंजीनियरिंग के 19 प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रो एलेन संजय रोचा एवं प्रो. निशीथ दुबे ने योगदान दिया।

समाज परिवर्तन के लिये शिक्षा

18 जनवरी को गोवा में ''जेवियर इतिहास शोध केन्द्र'' में ''समाज परिवर्तन के लिये शिक्षा'' विषय पर एक दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया। विस्तार केन्द्र के समन्वयक प्रो. ऐलन संजय रोचा ने सेमिनार में तकनीकी शिक्षा से संबंधित शोध पत्र प्रस्तुत किया। गोवा के राज्यपाल श्री भरत वीर वान्चू ने सेमिनार का उद्घाटन किया।

क्वालिटी काउंसिल ऑफ इंडिया द्वारा गुणवत्ता पर प्रशिक्षण

मानव संसाधन मंत्रालय ने क्वालिटी काउंसिल ऑफ इंडिया को तकनीकी संस्थाओं में गुणवत्ता के लिए एनआईटीटीटीआर के साथ मिलकर प्रशिक्षण देने के लिए कार्यक्रम तैयार किया। इस संबध में क्वालिटी काउंसिल ऑफ इंडिया के दिल्ली स्थित संस्थान में एनआईटीटीटीआर के निदेशकों तथा वरिष्ठ शिक्षकों की 4 एवं 5 फरवरी 2013 को एक बैठक संपन्न हुई। इस बैठक में निर्णय लिया गया कि क्वालिटी काउंसिल ऑफ इंडिया मार्च 2013 तक एनआईटीटीटीआर के 50 शिक्षकों को प्रशिक्षण प्रदान करेगी तथा ये शिक्षक पॉलिटेक्निक के 400 शिक्षकों का प्रशिक्षित करेंगें। इस प्रक्रिया में पूरे देश में जून 2013 तक लगभग 400 पॉलिटेक्निक के शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जायेगा । इस बैठक में संस्थान के निदेशक प्रो. विजय कुमार अग्रवाल, मानव संसाधन विकास, मंत्रालय के उप शिक्षा सलाहकार डॉ. ए.के.नासा, प्रो. डी.एस. करौलिया, प्रो.आर.पी.खम्बायत शामिल हुए। क्वालिटी काउंसिल ऑफ इंडिया के सीईओ श्री विपिन साहनी उपस्थित हुए। दिनांक 11 से 15 मार्च 2013 तक एनआईटीटीटीआर चंडीगढ़ एवं दिनांक 18 से 23 मार्च 2013 तक एनआईटीटीटीआर चेन्नई में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे ।

सॉफ्टवेयर एप्लीकेशन्स इन फॉर्मेसी पर कार्यक्रम

संस्थान के अनुप्रयुक्त विज्ञान विभाग द्वारा 4 से 8 फरवरी 2013 तक ''सॉफ्टवेयर एप्लीकेशन्स इन फॉर्मेसी विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। उक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभागियों को फॉर्मेसी विषय से संबंधित उत्पादन, विश्लेषण एवं अनुसंधान में प्रयुक्त होने वाले विभिन्न सॉफ्टवेयरर्स की जानकारी दी गई। साथ ही सॉफ्टवेयर को उपयोग करने हेतु प्रशिक्षण दिया गया। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. अभिलाष ठाकुर थे व संकाय सदस्य के रूप में प्रो. बशीर उल्लाह शेक ने सहयोग प्रदान किया।

इंडक्शन फेस - २

छत्तीसगढ़ राज्य के पॉलिटेक्निक एवं इंजीनियरिंग महाविद्यालयों के संकाय सदस्यों के लिए 28 जनवरी 2013 से 8

फरवरी 2013 तक इण्डक्शन ट्रेनिंग प्रोग्राम फेस–2 जगदलपुर में आयोजित किया गया। कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर प्राचार्य प्रो. एस.के.त्रिवेदी महिला पॉलीटेकनिक जगदलपुर एवं प्रो. जी.पी..खरे इंजीनियरिंग महाविद्यालय जगदलपुर उपस्थित थे। दो सप्ताह के इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रथम सप्ताह में दिनांक 28 जनवरी 2013 से 1 फरवरी 2013 तक डॉ. ए.के.सराठे एवं प्रो. यू.के.जैन तथा द्वितीय सप्ताह में डॉ. आर.पी.खम्बायत एवं डॉ. पियूष वर्मा ने प्रशिक्षण कार्यकम में संकाय सदस्य के रूप में अपने व्याख्यान दिये व सहयोग प्रदान किया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से तकनीकी संकाय सदस्यों को एडवान्स टीचिंग मेथड्स, करिकुलम ऐनालिसिस, प्रोजेक्ट डिजाईनिंग, लेबोरेटरी एक्सपेरिमेंट डिजाईनिंग एवं कन्डक्शन ऑफ डिमॉन्सट्रेशन और केस स्टेडी मेथड के बारे में विस्तार से प्रशिक्षण दिया गया। इस कार्यक्रम के समन्वयक प्रो. यू.के. जैन थे।

टीओटी प्रोग्राम आन वेल्डिंग एण्ड फेब्रीकेशन

विभाग में 25 फरवरी से 01 मार्च 2013 तक टीओटी प्रोग्राम आन वेल्डिंग एण्ड फेब्रीकेशन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के संयोजक डॉ. ए.के.सराठे एवं संकाय सदस्य प्रो. शरद प्रधान थे।

"केड यूजिंग मास्टर केम" पर प्रशिक्षण

मेकेनिकल अभियांत्रिकी विभाग में 4 से 8 फरवरी 2013 तक ''केड यूजिंग'' मास्टर केम विषय पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के दौरान प्रशिक्षणार्थियों को मास्टर केम सॉफ्टवेयर की मुख्य विशेषताओं से अवगत कराते हुए उसकी प्रोडक्ट डिजाईन में उपयोगिता तथा सीएनसी मशीनों द्वारा प्रोडक्ट बनाने की विस्तृत जानकारी दी गई। प्रशिक्षणार्थियों को सॉफ्टवेयर के माध्यम से अभ्यास पुस्तिका में दी गई 2डी, 3डी प्रोड्क्ट जामेट्री एवं 2डी टर्निंग एवं मिलिंग मशीनिंग से संबंधित एक्सरसाईज द्वारा प्रशिक्षण दिया गया। कार्यक्रम के अंत में प्रतिभागियों द्वारा इस तरह के कार्यक्रम के पुनः आयोजन के लिए अनुरोध किया। कार्यक्रम के

संयोजक डॉ. के.के.जैन एवं संकाय सदस्य के रूप में डॉ ए.के.सराठे ने अपना सहयोग प्रदान किया।

टाटा मोटर्स के प्रतिनिधि मंडल द्वारा संस्थान का भ्रमण

22 जनवरी 2013 को टाटा मोटर्स के प्रतिनिधि मंडल ने संस्थान का भ्रमण किया। इस प्रतिनिधि मंडल के सदस्य श्री संजीव गर्ग, ग्लोबल हेड, (कस्टमर केयर–सीवीबीयू) एवं सुश्री

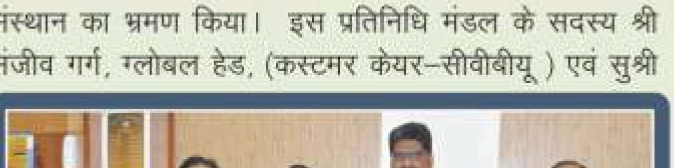

टाटा मोटर्स का प्रतिनिधि मंडल प्रो. विजय अग्रवाल के साथ

अल्पा मिश्रा, हेड (डेवलेपमेंट एंड ट्रेनिंग– कस्टमर सर्पोट) ने मेकेनिकल अभियांत्रिकी विभाग के संकाय सदस्यों से आगामी टाटा मोटर्स के प्रशिक्षणार्थियों को दिये जाने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में विस्तार से चर्चा की। डॉ. के. के. जैन ने टाटा मोटर्स के प्रतिनिधि मंडल को संस्थान के इलेक्ट्रानिक मीडिया एवं मेकेनिकल विभाग का भ्रमण कराया। इस भ्रमण के दौरान संस्थान की उपलब्धियों एवं क्षमताओं पर बनाई गई फिल्म भी दिखाई गई जिसे सभी ने अत्यधिक सराहा। संस्थान निदेशक प्रो. विजय अग्रवाल ने टाटा मोटर्स के प्रतिनिधि मंडल से भेंट की। इस अवसर पर निदेशक महोदय ने श्री संजीव गर्ग एवं सुश्री अल्पा मिश्रा का स्वागत किया व संस्थान में किये जा रहे कार्यो से अवगत कराया एवं टाटा मोटर्स के प्रशिक्षणार्थियों को मैकेनिकल विभाग द्वारा आगामी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने के संबंध में विस्तार से चर्चा की।

जीवन मूल्यों से मजबूत होता है संवेदना का धरातल : प्रो. विजय अग्रवाल

राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान भोपाल में दिनांक 29 जनवरी को राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक संपन्न हुई। बैठक में वर्ष भर आयोजित होने वाली हिन्दी कार्यशाला सह–प्रशिक्षण कार्यक्रम के विषयों एवं अवधि पर विचार करने के साथ–साथ संस्थान द्वारा राजभाषा हिन्दी के उन्नयन हेतु किये जा रहे कार्यो एवं भावी योजनाओं पर चर्चा की गई। बैठक को संबोधित करते हुए संस्थान के निदेशक प्रो. विजय अग्रवाल ने कहा कि आज भौतिकता की अंधी दौड़ में जीवन मूल्य समाप्त होते जा रहे हैं। आने वाला समय कठिन एवं चुनौतियों भरा है। युवाओं को जीवन मूल्यों से जोड़े रखना हमारी जिम्मेदारी है। जीवन मूल्यों से संवेदना का धरातल मजबूत होता है। संस्थान द्वारा अपने विद्यार्थियों एवं प्रशिक्षणार्थियों के लिए वर्ष भर देश के ख्याति प्राप्त चिंतक एवं विचारकों के व्याख्यान आयोजित किये जायेंगें। इन व्याख्यान एवं कार्यशालाओं में भोपाल के केन्द्रीय कार्यालयों के अधिकारी एवं कर्मचारी भी भाग लेंगे। इस बैठक में संस्थान के इलेक्ट्रॉनिक मीडिया विभाग द्वारा आजादी की लड़ाई के समय अंग्रेजों द्वारा जब्त की गई देश भक्ति के गानों पर आधारित आडियों सीडी के प्रकाशन, तकनीकी शिक्षा से संबंधित वीडियो फिल्म निर्माण, संस्थान का इतिहास लेखन, गोल्डन जुबली समारोह का आयोजन, संसदीय राजभाषा समिति द्वारा संस्थान का निरीक्षण, पुस्तकालय में हिन्दी साहित्य की पुस्तकों का क्रय आदि पर चर्चा की गई। इस बैठक में राजभाषा समिति के नये सदस्यों का स्वागत किया गया। इस बैठक में प्रो. आर.जी. चौकसे, प्रो. आर.के. दीक्षित, प्रो. ए.के. जैन, प्रो. बी. एल. गुप्ता, प्रो. पी.के. पुरोहित, प्रो. एम.सी. पालीवाल, डॉ. बशीरूल्ला शेक, प्रो. के.के. पाठक, प्रो. अस्मिता खजांची, प्रो. सूसन मेथ्यू, श्री डी.के. तिवारी, श्री एस.एस. अस्थाना सहित राजभाषा समिति के अधिकारी/कर्मचारी उपस्थित थे।

9 वीं अंतर एन.आई.टी.टी.टी.आर. स्पोर्टस मीट

21 फरवरी से 24 फरवरी 2013 तक नवीं अंतर एनआईटीटीटीआर स्पोर्टस मीट का आयोजन चंढीगढ़ में किया गया। जिसमें चारों एनआईटीटीटीआर के 100 से अधिक पुरूष–महिला खिलाड़ियों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लिया। स्पोर्टस मीट का उद्घाटन श्री रामअवतार सिंह जाखड़, वाइस प्रसिडेन्ट, राजस्थान वालीबाल, एसोशियसन ने किया। चार दिन चले इस खेल समागम में सभी खिलाड़ियों ने संघर्ष करते हुए पदक के लिये संघर्ष किया। संस्थान द्वारा इस वार्षिक खेल समागम में 30 खिलाड़ियों एवं अधिकारियों का एक दल भेजा गया था। संस्थान के सभी खिलाड़ियों ने संघर्ष करते हुए 05 स्वर्ण, 10 रजत एवं 02 कांस्य पदकों के साथ उपविजेता रहे। संस्थान के निदेशक ने चंडीगढ़ जाने वाली टीम को संबोधित करते हुये कहा कि दृढ़ संकल्प, आत्मविश्वास एवं खेल भावना हमारा आधार होना चाहिए व इसके माध्यम से मैत्री व आपसी विश्वास बढ़ना चाहिए। इस मीट में केरम, शतरंज, टेबल–टेनिस, बालीवाल, बेडमिन्टन, सौ मीटर दौड़, ऑक्सन ब्रिज आदि प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई थीं। इस मीट में एनआईटीटीटीआर भोपाल के निदेशक प्रो. विजय अग्रवाल व एनआईटीटीटीआर कोलकाता के निदेशक प्रो. एस.के. भट्टाचार्य भी उपस्थित रहे।

शोधकर्ताओं के लिए मेटलेब

मध्यप्रदेश के युवा वैज्ञानिकों के लिए एनआईटीटीटीआर एवं मेपकॉस्ट भोपाल द्वारा संयुक्त रूप से ''मैट लैब फार रिसर्चस''का दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 26–27 फरवरी 2013 को आयोजित किया गया। कार्यक्रम में म.प्र. के 16 युवा वैज्ञानिकों ने मेटलेब के विविध अनुप्रयोगों की जानकारी हासिल की। कार्यक्रम के समन्वयक प्रो. के.के. पाठक तथा डी.आर.डी.ओ. के डॉ. पांचाल मैनिट के डॉ. शैलेन्द्र जैन तथा जेपी विश्वविद्यालय, गुना के डॉ. विपिन त्यागी ने विशेषज्ञ के रुप में व्याख्यान दिये।

औद्योगिक भ्रमण का आयोजन

मेकेनिकल विभाग द्वारा माह जनवरी 2013 में एम.टेक के छात्रों एवं प्रशिक्षाणार्थियो के लिए औद्योगिक संस्थानों का भ्रमण कराया गया। इस दौरान प्रशिक्षणार्थियो ने बी.एच.ई.एल. एवं आयशर ट्रेक्टर, भोपाल का भ्रमण किया। इन औद्योगिक संस्थानों के कुशल इंजीनियरों द्वारा उनको आटोमेशन एवं मेकाट्रानिक्स सिस्टम के एप्लीकेशन तथा मशीनों के रखरखाव से संबधित जानकारी प्रदान की गई। इस भ्रमण से समस्त छात्र एवं प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। छात्रों एवं प्रशिक्षणार्थियो ने विभागाध्यक्ष डॉ. के.के.जैन, प्रो. शरद प्रधान, डॉ. वंदना सोमकुंवर एवं डॉ.ए.के.सराठे को इन औद्योगिक संस्थानों के भ्रमण को आयोजित करने के लिए धन्यवाद दिया। इस भ्रमण की समन्वयक डॉ. वंदना सोमकुवर थीं।

कम्यूनिकेशन एण्ड प्रेजेन्टेशन स्किल्स पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

शिक्षा एवं अनुसंधान विभाग द्वारा ''कम्यूनिकेशन एण्ड प्रेजेन्टेशन स्किल्स'' पर 7 से 11 फरवरी 2013 तक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों को सम्प्रेषण एवं प्रस्तुति की कलाओं में निष्णात करना था। इस कार्यक्रम में प्रतिभागियों को प्रशिक्षण की विभिन्न विधियों द्वारा सम्प्रेषण कौशल, समूह में सम्प्रेषण संवाद तथा सम्प्रेषण से सम्बन्धित अन्य कौशल जैसा–पढ़ना, लिखना, बोलना एवं गंभीरता से सुनना, साथ ही प्रस्तुतीकरण की विभिन्न विधियाँ जैसे विषयों पर प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षणार्थियों ने इन सभी गतिविधियों को शैक्षिक अभ्यास में समाविष्ट करते हुए अपना–अपना प्रस्तुतिकरण दिया। इस कार्यक्रम में सैन्य विभाग एवं पॉलिटेक्निक महाविद्यालय से आए हुए प्रशिक्षणार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. अजित दीक्षित थे। प्रो. एस.आर. गनोरकर ने संकाय सदस्य के रूप मे योगदान दिया।

ए - व्यू पर इन्डक्शन फेस - १ आयोजित

राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, भोपाल द्वारा 28 जनवरी से 8 फरवरी 2013 तक इन्डक्शन प्रशिक्षण कार्यक्रम फेस–प्रथम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम ''ए–व्यू'' पर आधारित था। इस कार्यक्रम के लिये एक रिसोर्स सेन्टर अंबिकापुर पॉलिटेक्निक कॉलेज में तथा दूसरा सेन्टर एनआईटीटीटीआर, भोपाल को बनाया गया। इसमें कुल 22 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम के द्वारा प्रतिभागियों को तकनीकी शिक्षा प्रणाली, तकनीकी शिक्षकों की भूमिका एवं जिम्मेदारी, सम्प्रेषण कौशल, प्रिन्ट सामग्री की रूपरेखा एवं विकास जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. एस.के. सक्सेना थे। प्रथम सप्ताह में डॉ. एस.के. सक्सेना एवं डॉ. अन्जू रौले तथा द्वितीय सप्ताह में डॉ. सी.के. चुघ एवं डॉ. शैलेन्द्र सिंह ने संकाय सदस्यों के रूप में योगदान दिया।

परीक्षा नियंत्रण कक्ष का उद्घाटन

16 जनवरी 2013 को संस्थान के परीक्षा नियंत्रण कक्ष का उदघाटन हुआ। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक प्रो. विजय कुमार अग्रवाल का परीक्षा अधीक्षक डॉ. शैलेन्द्र सिंह ने स्वागत किया। राजीव गांधी प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, भोपाल से सम्बद्ध 22 महाविद्यालय के परीक्षा केन्द्र हेतु एनआईटीटीटीआर को चुना गया। इस परीक्षा केंन्द्र में कुल 6352 छात्रों ने परीक्षा दी।

कैड केम पर प्रशिक्षण

दिनांक 07 से 18 जनवरी 2013 के मध्य ऐप्लीकेशन ऑफ कैड केम विषय पर प्रशिक्षण आयोजित किया गया। दो सप्ताह के इस कार्यकम के दौरान पॉलिटेक्निक एवं इंजीनियरिंग महाविद्यालयों के संकाय सदस्यों को कम्प्यूटर ऐडेड डिजाईन एवं ड्राफटिंग के साफ्टवेयर जैसे आटो केड 2010 एवं केटिया के बारें में विस्तार से प्रशिक्षण दिया गया। इस कार्यक्रम की समन्वयक डॉ वंदना सोमकुंवर थीं। एवं डॉ. के. के.जैन, प्रो. शरद प्रधान एवं डॉ. ए.के.सराठे ने संकाय सदस्य के रुप में सहयोग दिया।

गणतंत्र दिवस समारोह

राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान भोपाल में गणतंत्र दिवस समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ. विजय कुमार अग्रवाल ने संस्थान में झंडावंदन कर संस्थान के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई दी। इस अवसर पर फिल्म शो एवं अन्य कार्यक्रम भी आयोजित किये गये।

मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना करती विजय की कविताएँ - ओम भारती

एनआईटीटीटीआर, भोपाल के निदेशक एवं हिन्दी के वरिष्ठ रचनाकार प्रो. विजय अग्रवाल पर केन्द्रित ''रागभोपाली'' के विशेषांक का लोकार्पण, भोपाल में वरिष्ठ पत्रकार श्री लज्जाशंकर हरदेनिया एवं साहित्यकार हुकुम पाल सिंह ''विकल'' ने किया। मायाराम सुरजन स्मृति भवन, मध्यप्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभागार मे आयोजित कार्यक्रम में विजय अग्रवाल की रचानाओं पर चर्चा हुई। वरिष्ठ कवि श्री ओम भारती ने कहा कि विजय की कविताएं समाज में लुप्त होते जा रहे मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना की ओर सतत प्रयास करती दिखाई पड़ती है। उनकी रचनाओं में भाषा का जो स्तर और तेवर मिलता है वह इस बात को पुष्ट करता है कि वे एक समर्थ कवि हैं। उनकी कविताओं में प्रेम का जो स्वरूप विद्यमान हैं वह उदात्तीकरण की प्रक्रिया का हिस्सा है। ''धरती का बेटा'' शीर्षक से लिखी गई उनकी रचना एक परिपक्व भावभूमि पर उन्हें खड़ा करती है। उनकी छोटी कविताएं हमें अंदर तक हॉन्ट करती है।

वरिष्ठ कवि श्री हुकुम पाल सिंह ''विकल''ने कहा कि विजय अग्रवाल को सुनते हुए ऐसा लगा कि वे मानवीय संवेदना के तंतुओं को झंकृत कर रहे हैं। वे प्रगतिशील विचार धारा के ऐसे कवि हैं जो शोषितों एवं वंचितों के साथ साथ लुप्त होती जा रही संवेदना से नई पीढ़ी को परिचित कराना चाहते है। वे केदार नाथ अग्रवाल की परम्परा को आगे बढ़ाने का काम कर रहे हैं। श्री शैलेन्द्र कुमार शैली ने कहा कि आज समाज में इतने मुखौटे हैं कि शत्रु और मित्र की पहचान मुश्किल हो रही है। इंसान के रुप में विजय भरोसे के लायक हैं यह बड़ी बात है। वे एक ऐसे कवि हैं जो समाज में ध्वस्त होते मानवीय सम्बन्धों की सर्वाधिक चिंता कर रहे हैं। वे दलित, पीड़ित तथा शोषितों और वंचितों के पक्ष में खड़े हैं, यह सुकून देने वाली बात है। उनकी रचनाएं इन्ही मूल्यों की रक्षा में खड़ी हैं, इसलिए आम जनता के बीच लोकप्रिय भी होंगी। भोपाल में उनका आना हमारे हौसलों का बुलंद होना है। प्रज्ञा रावत ने भावविह्वल होकर कहा कि विजय भाई की रचनाएं उन्हीं भावभूमि पर है, जहाँ कविता को होना चाहिए। वे मेरे पिता भगवत रावत के स्नेहपात्र रहे हैं। वे हमेशा उनके साथ रहे हैं जिनके पैरों की बिवाई उन्होंने देखी है। आज कोई किसी के पैरों की पीड़ा नहीं देखता लेकिन विजय की रचनाओं में उनकी वह दृष्टि साफ साफ दिखाई पड़ रही है। कामरेड गोविन्द सिंह असिवाल ने कहा कि विजय अग्रवाल एक बेहतर प्रशासक के साथ साथ एक ऐसे इन्सान हैं जो अपनी क्रियाशीलता तथा सूझबूझ के लिए जाने जाते हैं। उनमें स्पष्ट राजनैतिक समझ विद्यमान है। प्रशासक के रुप में वे हमारा काम आसान कर रहे हैं। विज्ञान तथा साहित्य पर लिखित संपादित पुस्तकों का जिक्र करते हुए कहा कि उनकी पुस्तकों में साहित्य तथा विज्ञान का अद्भुद समन्वय मिलता है। वे ऐसे रचनाकार हैं जिससे समाज को बहुत सी अपेक्षाएं हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए लज्जाशंकर हरदेनिया ने कहा कि यदि एक बेहतर इंसान आपके आसपास मौजूद है तो आपके बारे में अच्छी राय कायम होती है। विजय अग्रवाल ऐसे ही व्यक्ति हैं जिनका साथ हमेशा संबंधों के उच्च मापदंड पर खरा उतरता है। वे जिस तरह की कविताएं लिख रहे हैं समाज के विकृत होते चेहरे को बेनकाब तो करता ही है साथ ही मरहम का भी काम कर रहा है। उनका सरोकार समाज से तो है ही वे वनस्पतियों, पक्षियों तथा सम्पूर्ण प्रकृति से भी तादात्म्य बना कर रचना कर रहे हैं। उनकी यह समझ भी काबिल ए तारीफ है युवा की पीढ़ी साहित्य एवं समाज विकास से जुड़े ताकि वे मूल्यपरक शिक्षा प्राप्त कर सकें। इसीलिए उनके संस्थान में उच्चस्तरीय साहित्यिक आयोजन तथा कार्यशालाएं सम्भव हो सकीं। समाज का वह वर्ग जो हर तरह से हाशिये पर है, उनका सहारा पा रहा है।

इस अवसर पर कवि के रूप में बोलते हुए विजय अग्रवाल ने कहा कि स्व. भगवत रावत की प्रेरणा तथा साथ ने काव्य संग्रह तैयार करने में सहायता की। ये कविताएं कभी एकांत में वार्तालाप की हैं तो कभी कुछ अव्यक्त को व्यक्त करने का प्रयास भी। उन्होंने 28 छोटी लंबी कविताओं का पाठ किया जिसमें ''गजाला के सपनों में नहीं आती परियां ''तथा ''गुनाह'' शीर्षक की कविताओं ने श्रोताओं को प्रभावित किया। प्रेम कविताओं में ''मैने नहीं देखा सावित्री को, लेकिन वह तुम जैसी रही होगी' दाम्पत्य के पवित्र रिश्ते को उजागर करती है। कार्यक्रम का संचालन करते हुए श्री मोहन सिंह ठाकुर ने ''रागभोपाली के विशेषांक में प्रकाशित कविताओं पर अपना संक्षिप्त आलेख प्रस्तुत किया इस अवसर पर श्रीमती साधना अग्रवाल, जया नर्गिस, राजेश दीक्षित, राजेन्द्र शर्मा, एस.एस. अस्थाना, माता चरण मिश्र, प्रो. के.एम. रस्तोगी, आरती आदि उपस्थित थे।

"प्रेरणा और परामर्श" पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

संस्थान के प्रबंध विभाग ने शासकीय पॉलिटेक्निक दुर्ग में 14–15 फरवरी 2013 के दौरान ''प्रेरणा एवं परामर्श'' पर छत्तीसगढ़ राज्य की पॉलिटेक्निक संस्थाओं के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जिसका उद्‌घाटन पॉलिटेक्निक, दुर्ग की प्राचार्य श्रीमती ऊषा जैन ने किया। इस कार्यक्रम में प्रशिक्षणार्थियों के प्रेरणा के स्तर को मापा गया एवं इसमें वृद्धि करने के लिए रणनीतियां सुझायी गयी। साथ ही पॉलिटेक्निक के विद्यार्थियों को किस प्रकार की एवं कैसे परामर्श दी जाये जैसे बिन्दुओं पर विस्तृत चर्चा की गई। प्रशिक्षण में प्रेरणा एवं परामर्श के सिद्धांत, केस विधि, चर्चा एवं प्रस्तुतिकरण विधियों का उपयोग किया गया। परामर्श एवं प्रेरणा से जुड़ी हुई कई विडियों क्लिपिंग का उपयोग किया गया। कार्यक्रम के समापन में पॉलिटेक्निक की प्राचार्य

श्रीमती ऊषा जैन एवं वरिष्ठ प्राध्यापक श्री रमन मेहर ने भी प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम के समन्वयक प्रो. बी.एल. गुप्ता थे एवं प्रो. पियूष वर्मा ने संकाय सदस्य के रूप में योगदान दिया।

कौशल विकास पर व्याख्यान

6 फरवरी 2013 को प्रो. आर.जी. चौकसे द्वारा इन्दिरा गांधी विश्वविद्यालय, रायपुर के कृषि अभियांत्रिकी महाविद्यालय में, ''कौशल विकास'' विषय पर व्याख्यान देते हुये छत्तीसगढ़ प्रदेश के विकास के लिये नवयुवकों के कौशल विकास पर बल दिया। इसके लिये उन्होंने योग्यता आधारित प्रशिक्षण एवं प्रमाणीकरण को आवश्यक बताया।

आउटकम बेस्ड करीकुलम पर व्याख्यान

दिनांक 14 फरवरी 2013 को स्वामी विवेकानन्द तकनीकी विश्वविद्यालय, भिलाई में ''आउटकम बेस्ड करीकुलम फॉर छत्तीसगढ़ स्टेट'' विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में संस्थान के प्रो. आर.जी. चौकसे ने स्टेट तकनीकी शिक्षा सिस्टम रिव्यू रिवीजन पर अपना उद्‌बोधन दिया। इस कार्यक्रम में

प्रो. वी.सी. मल, कुलपति भी उपस्थित थे। इस अवसर पर 40 विशेषज्ञों ने भाग लिया। तकनीकी विश्वविद्यालय के कुलपति ने एनआईटीटीटीआर, भोपाल से 15 पाठ्यक्रम विकास हेतु अनुरोध किया है।

स्कूल फार स्किल इन एलाइड पैरामेडिकल साइन्स

एनआईटीटीटीआर, भोपाल अपने विस्तार केन्द्र रायपुर में जनजाति के बच्चों के लिए एलाइड पैरामेडिकल हेल्थ साइन्स पर तीन प्रशिक्षण प्रारंभ करने जा रहा है। जिनमें हेल्थ असिस्टेन्ट, इमरजेन्सी मेडिकल टेक्निशियन एवं ऑपरेशन, थियेटर टेक्निशियन शामिल हैं। एक वर्षीय इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में डॉ. सबादल शाह,

जे.व्ही.एस. इनोवेशन प्राइवेट लिमिटेड, कोलकत्ता सहयोग प्रदान कर रहा है। इस संदर्भ में 25 जनवरी 2013 को संस्थान में निर्देशक प्रो. विजय अग्रवाल की अध्यक्षता में एक बैठक आयोजित की गई जिसमें प्रो. आर.जी. चौकसे, प्रो. चंचल मेहरा एवं शहर के चिकित्सकों ने भाग लिया।

औषधीय उद्यान का उद्घाटन

औषधीय पौधों की महत्ता को देखते हुये एनआईटीटीआर, भोपाल में मेपकास्ट के सहयोग से एक औषधीय उद्यान की स्थापना की गई। इस उद्यान का उद्घाटन दिनांक 14 फरवरी 2013 को संस्थान परिसर में मेपकास्ट के निदेशक प्रो. पी.के. वर्मा तथा हरीसिंह सागर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एन.एस. गजभिये के मुख्य आतिथ्य में संपन्न हुआ। इस अवसर पर लगभग 200 औषधीय पौधों का रोपण किया गया। संस्थान के निदेशक प्रो. विजय कुमार अग्रवाल ने अतिथियों का स्वागत किया। परिसर में सम्पन्न हुये कार्यक्रम में मेपकास्ट के वैज्ञानिकगण एवं संस्थान के संकाय सदस्य, अधिकारी एवं कर्मचारीगण उपस्थित थे।

"विन्ड पॉवर डेवलपमेंट और यूस 2013" पर प्रशिक्षण

अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम ''विन्ड पॉवर डेवलपमेंट और यूस 2013'' में सहभागिता करते हुए संस्थान के प्रो. ए.एस. वाल्के ने 30–31 जनवरी 2013 तक शंघाई (चीन) में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया एवं ''स्माल विन्ड टर्बाईन जेनरेट'' पर प्रस्तुति दी। इस कार्यक्रम में भारत के अलावा वियतनाम एवं चीन के प्रशिक्षणार्थियों ने भी भाग लिया। यह कार्यक्रम लाइफ एकेडेमी, स्वीडन द्वारा आयोजित किया गया था। प्रो. ए.एस. वाल्के को इस सम्मेलन में भाग लेने हेतु संस्थान परिवार ने बधाई दी।

इन्डिया जियोस्पेसिअल फोरम 2013 में शोधपत्र प्रस्तुत

राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, भोपाल के प्रो. एम.सी. पालीवाल ने हैदराबाद में आयोजित ''इन्डिया जियोस्पेसिअल फोरम 2013'' में 22 से 24 जनवरी 2013 तक भाग लिया एवं रिमोट सेन्सिंग पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया। इस फोरम में देश के लगभग 1500 वैज्ञानिकों एवं शोधकर्ताओं ने भाग लिया साथ ही रिमोट सेन्सिंग पर शोधपत्र प्रस्तुत किये। जिसमें विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, नेशनल रिमोट सेन्सिंग, सेन्टर इन्डियन स्पेस रिसर्च ओर्गनाइजेशन प्रमुख थे।

- संस्थान के प्रो. आर.जी. चौकसे एवं प्रो. अभिलाष ठाकुर ने 4 से 5 जनवरी 2013 तक बाली, इन्डोनेशिया में आयोजित, अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार में अपने शोध पत्र प्रस्तुत किये।
- संस्थान के व्यावसायिक शिक्षा एवं उद्यमिता विकास विभाग के प्रो. आर.जी. चौकसे को अंतर्राष्ट्रीय वायोग्राफिकल सेन्टर, केम्ब्रिज इग्लैण्ड (यूके) द्वारा ''लीडिंग इन्जीनियर्स ऑफ द वर्ल्ड–2013'' की सूची में नामित किया गया है। इस अवसर पर संस्थान परिवार की ओर से प्रो. चौकसे को बधाई दी गई।

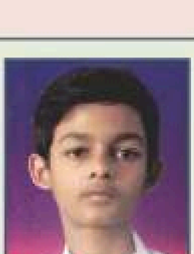

संस्थान के कनिष्ठ आशुलिपिक श्री अमित गुप्ता के सुपुत्र को उनकी प्रतिभा के प्रदर्शन हेतु जीटीवी द्वारा रियलटी शो ''इण्डिया बेस्ट ड्रामेवाज'' गोरेगांव में फाइनल मेगा ऑडीशन में चुना गया। मा. प्रसन्न गुप्ता ने 14 फरवरी से 18 फरवरी 2013 तक मुंबई के फेमस स्टुडियो एवं वृंदावन स्टुडियो में आयोजित फाईनल मेगा आडिशन में अपनी प्रस्तुति दी। इस शो के निर्णायक मण्डल में सिने कलाकार सोनाली बेंद्रे, विवेक ओबेराय एवं अनुराग बसु उपस्थित थे। मा. प्रसन्न गुप्ता विगत पॉच वर्षो से भोपाल सहित भारत के शहरों में कई नाटकों का मंचन कर चुके हैं। वे चिल्ड्रन थियेटर एवं आर्ध्य कला आकादमी, भोपाल के नियमित सदस्य हैं।

आगामी महीनों में प्रस्तावित प्रशिक्षण कार्यक्रम/PROGRAMMES FOR POLYTECHNICS/ENGINEERING COLLEGES

No.	TITLE	DURATION	VENUE
1	LINUX Server Administration (For Indore Women Polytechnic)	01-05 April 13	Indore
2	Managing and Developing New Polytechnics	01-05 April 13	Ahmedabad
3	Video Production for Civil Engineering	01-12 April 13	Bhopal
4	Developing Positive Thinking & Attitude and Managing Time Effectively	08-12 April 13	Bhopal
5	Academic & Research Paper Writing	08-12 April 13	Bhopal
6	Corporate Social Responsibility for Industries	08-12 April 13	Bhopal
7	Managing Stress at Work	08-12 April 13	Bhopal
8	Accreditation and Academic Audit	08-12 April 13	Ahmedabad
9	E-Content Development Workshop for Engineering Mechanics	08-19 April 13	Bhopal
10	Induction Phase – II	08-19 April 13	Goa
11	NBA Accreditation-Mapping Of PEOs, POs and COs	15-19 April 13	Bhopal
12	Innovation and Creativity in Teaching-Learning	15-19 April 13	Jagdalpur
13	Numerical Methods and its Applications in Engineering and Science	15-19 April 13	Bhopal
14	Research Paper Writing	15-26 April 13	Bhopal
15	Design & Development of Dynamic Website Using PHP	15-26 April 13	Bhopal
16	Induction Phase-I	15-26 April 13	Ahmadabad
17	Applications of Advance Statistical Tools in Research	22-26 April 13	Bhopal
18	Induction Phase-I	22 April - 03 May 13	Bhopal
19	Careers in Renewable Energy Technology (In Colla- -boration with Tata Energy Research Institute -TERI)	22-26 April 13	Goa
20	Staff Development through Performance Appraisal	29 April - 03 May 13	Bhopal
21	2 D Animation Development	29 April - 03 May 13	Pune
22	Developing Model Question Papers as per Specification Table in Electrical Engineering and Allied Disciplines (For I to III Semester of Diploma Programme)	29 April - 03 May 13	Ahmedabad
23	Advanced AutoCAD	29 April - 03 May 13	Bilaspur
24	Induction Phase-I	29 April - 10 May 13	Ahmadabad
26	Induction Phase-I (At Vasai)	29 April - 10 May 13	Mumbai
26	Managerial Skills	06-10 May 13	Bhopal
27	Innovations in Change & Time Management	06-10 May 13	Pune
28	Developing Model Question Papers as per Specifica- -tion Table in Civil Engineering and Allied Disciplines (For I to III Semester of Diploma Programme)	06-10 May 13	Ahmedabad
29	Management of CDTP Scheme for Gujarat state	06-10 May 13	Ahmedabad
30	Maintenance of Engineering Workshop and Laboratory	06-10 May 13	Raigarh
31	2-D Animation Development	06-17 May 13	Bhopal
32	PC Maintenance and Troubleshooting	06-17 May 13	Bhopal
33	Induction Phase- I	06- 17 May 13	Nasik
34	Entrepreneurship Development	06-17 May 13	Pune
35	Laptop and Mobile Repair and Maintenance	06-17 May 13	Goa
36	Advances in Automobile Engineering	13-17 May 13	Bhopal
37	Developing Model Question Papers as per Specification Table in Computer/IT Engineering (For I to III Semester of Diploma Programme)	13-17 May 13	Ahmedabad
38	Attitude Development and Positive Thinking for Human Relation and Time Management	13-17 May 13	Jagdalpur
39	Induction Phase-I	13-24 May 13	Bhopal
40	Core Teaching Skills	13-24 May 13	Bhopal
41	Strength of Materials and Theory of Elasticity	13-24 May 13	Bhopal
42	Induction Phase- I (For Vaishnav Engineering College)	13-24 May 13	Indore
43	Making Mathematics Interesting and Understandable	20-24 May 13	Bhopal
44	Management of CDTP Scheme for Madhya Pradesh State	20-24 May 13	Bhopal
45	Advance Tele-communication Engineering	20-24 May 13	Bhopal
46	Developing Model Question Papers as per Specification Table in Mechanical Engineering and Allied Disciplines (For I to III Semester of Diploma Programme)	20-24 May 13	Ahmedabad
47	Leadership Development	27-31 May 13	Bhopal
48	Developing Model Question Papers as per Specification Table and Lab Practices-Leading to Skill Development in Chemistry and Physics (For I to III Semester of Diploma Programme)	27-31 May 13	Ahmedabad
49	Water Harvesting, Waste Management, Vermi-composting (In Collaboration with Indian Council of Agriculture Research- ICAR)	27-31 May 13	Goa
50	Enhancing Competency in Computer Literacy	27-31 May 13	Jagdalpur
51	Industrial Training for Newly Recruited Teachers	27 May - 07 June 13	Bhopal
52	Using Web Resources for Effective Teaching Learning Process	03-07 June 13	Bhopal
53	Managing Students Problems During Adolescence	03-07 June 13	Bhopal
54	Project Planning and Management	03-07 June 13	Bhopal
55	Modern Instrumentation Techniques in Science	03-07 June 13	Bhopal
56	Developing Lab Practices and Mini Project Work - to Skill Development in Electrical Engineering and Allied Disciplines (For I to IV Semester of Diploma Programme)	03-07 June 13	Ahmedabad
57	IP NETWORKING	03-07 June 13	Bilaspur
58	Improving Quality of Students Project Work	03-07 June 13	Goa
59	Installation, Testing and Maintenance of Electrical Equipment	03-07 June 13	Bhopal
60	Application of CAD / CAM	03-14 June 13	Bhopal
61	Induction Phase-I (For BS Patel Polytechnic)	03-14 June 13	Mehsana
62	Developing Multimedia with Reference to Camera, Filming, Editing	10-14 June 13	Bhopal
63	Management of CDTP Scheme for Maharashtra State	10-14 June 13	Pune
64	Developing Lab Practices and Mini Project Work- Leading to Skill Development in Computer/IT Engineering and Allied Disciplines (For I to IV Semester of Diploma Programme)	10-14 June 13	Ahmedabad
65	Special Methods of Teaching Pharmaceutical Aspects	10-14 June 13	Bhopal
66	Induction Phase-II	10-21 June 13	Bhopal
67	Core Teaching Skills	10-21 June 13	Bhopal
68	Promotion of Small Scale Industries through Entrepreneurship	10-21 June 13	Ahmedabad
69	Induction Phase-I	10-21 June 13	Nagpur
70	Applications of Mathematics in Science and Engineering	17-21 June 13	Bhopal
71	Management of CDTP scheme for Chhattisgarh and Goa states	17-21 June 13	Bhopal
72	Developing Lab Practices and Mini Project	17-21 June 13	Ahmedabad
73	Computer Networking Using Windows Server	17-21 June 13	Bhopal
74	Store Purchase and Financial Management	17-21 June 13	Raipur
75	Soft Skills Development for Self-Effectiveness	17-21 June 13	Jagdalpur
76	CATIA Basic	17-28 June 13	Goa
77	Research in Education Media	24-28 June 13	Bhopal
78	Induction Phase-I (For Vidyalankar Dnyanpeeth Trust at Wadala)	17-28 June 13	Mumbai
79	Advances in Inventory Control Methods Work- Leading to Skill Development in Mechanical Engineering and Allied Disciplines (For I to IV Semester of Diploma Programme)	24-28 June 13	Pune
80	Developing Lab Practices and Mini Project Work- Leading to Skill Development in Civil Engineering and Allied Disciplines (For I to IV Semester of Diploma Programme)	24-28 June 13	Ahmedabad
81	Induction Phase-II	24 June - 05 July 13	Bhopal

मुख्य संरक्षक : प्रो. अमिताभ घोष, संरक्षक : प्रो. विजय अग्रवाल, निदेशक, संपादक : प्रो. पी. के. पुरोहित
सहसंपादक : श्री एस. एस. अस्थाना, छायांकन : श्री ए. एल. विश्वकर्मा
आन्तरिक वितरण हेतु राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, भोपाल द्वारा प्रकाशित एवं भंडारी ऑफसेट प्रिंटर्स द्वारा मुद्रित